ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

इस अंक का मूल्य : 5 रु०
वर्ष 42, अंक 1 एक प्रति
सोमवार 12 सोमवार, 2018 से रविवार 18 नवम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भारत की राजधानी दिल्ली में
आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25 से 28 अक्टूबर 2018
दिल्ली
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अद्भुत, अविस्मरणीय, अतुलनीय, जो सोचा भी न था उससे भी विशाल ऐतिहासिक आयामों के साथ सम्पन्न हुआ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018

माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया उद्घाटन

माननीय गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह ने किया समापन समारोह में 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्घोष

स्वामी रामदेव ने सभा के प्रकल्प 'घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ' के नारे को किया बुलन्द

मानव कल्याण विश्वशान्ति एकता एक रूप यज्ञ में लिया 10 हजार याज्ञिकों ने भागः रिकार्ड दर्ज

32 देशों के 3000 प्रतिनिधियों सहित सम्पूर्ण भारत से लगभग दो लाख से अधिक आर्यजनों ने लिया भाग

मानव कल्याण विश्वशान्ति एकता यज्ञ का नयनाभिराम दृश्य

महासम्मेलन में सम्पन्न हुए विशाल एक रूप यज्ञ की विडियो देखने के लिए क्लिक करें

www.youtube.com/watch?v=byaeafqIBvU

उत्साह, उमंग, नवचेतना के सन्देश देता हुआ आर्यों का महाकुंभ – अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 सम्पन्न

आर्य समाज के इतिहास में जुड़ा एक और गौरवपूर्ण अध्याय

यह विचार कोरी कल्पना से या भावनात्मक दृष्टि से नहीं यथार्थता है, जन-जन की भावना है। असंभव कुछ नहीं, आवश्यकता है सही कार्य के निर्णय की, कार्य की, सही योजना की, और उसके साथ पूर्ण पुरुषार्थ की। यह सब कहने और सुनने में तो कई बार आता रहा है किन्तु उसका प्रत्यक्ष परिणाम या उसका फल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को देखने पर हुआ।

उपस्थित आर्यजनों ने अपनी कल्पना से ऊपर अकल्पनीय दृश्य देखकर आश्चर्य तो किया ही पर मुख से अकस्मात् निकला आह ....वाह-वाह....., गजब है. ....., कितना भव्य है ऐसा तो कोई सोच भी नहीं सकता था आदि विचार प्रत्येक आगन्तुक के भावों में या वाणी में और इससे भी अधिक उनकी विस्मयकारी आंखों की और चेहरे की चमक से, प्रसन्नता से प्रदर्शित हो रही थी।

प्रत्यक्ष रूप से मिलने वाला कोई व्यक्ति मिलता तो सबसे पहला शब्द यही होता बधाई हो, बहुत धन्यवाद, इतना बड़ा और भव्य कार्यक्रम तो कभी सोचा ही नहीं, आनन्द आ गया। इस प्रकार की अभिव्यक्ति सभा के पदाधिकारियों या कार्यकर्त्ताओं को सुनने को मिल रही थी। आर्यजन आपस में ऐसे मिल रहे थे जैसे किसी विशेष पर्व पर प्रसन्न होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति इस आयोजन को सराहा रहा था। कई कहते **''भूतो न भविष्यति''** हम कहते भाई भूत का तो माना जा सकता है किन्तु भविष्य न कहो, 2024 में महर्षि का 200 वां जन्म वर्ष है उसे इससे भी वृहद रूप से मनायेंगे। यह सब शब्दों, विचारों से पूर्ण भाव-भंगिमा का होना स्वाभाविक ही था, इसमें कोई मिथ्या भाव या अतिश्योक्ति नहीं है।

कार्यक्रम को भव्य विशाल और सार्थकता प्रदान करने में तीन पहलुओं को देखना होगा। पहला है कार्यक्रम का विचार, उसकी योजना और पूरी रूपरेखा निर्मित करना। जिस प्रकार किसी इमारत के लिए एक व्यवस्थित, पूर्व से सोची-विचारी योजना को कागज पर चित्रित किया जाता है, जिसे नक्शा कहते हैं, यह नक्शा एक प्रशिक्षित इन्जीनियर के मार्गदर्शन में तैयार होता है, उसके अनुसार भवन का निर्माण होता है, जैसा नक्शा वैसा भवन। ठीक उसी प्रकार इस कार्यक्रम की पूर्व प्लानिंग कई माह से होती रही, जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रमुख अधिकारी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के बड़ी संख्या में अधिकारी, अन्य कई आर्य समाज के वरिष्ठ नेता व कार्यकर्त्ताओं के द्वारा एक लम्बे समय के विचार विमर्श के पश्चात् अनेक प्रबुद्ध विचारशील आर्यजनों ने सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य के नेतृत्व में इसे अन्तिम रूप दिया। भाई धर्मपाल आर्य को सम्मेलन का संयोजक मनोनीत किया था, उनके साथ ही श्री विनय आर्य की सक्रियता इसकी एक विशेष कड़ी रही। जब योजना अच्छी थी तो उसका व्यावहारिक रूप तो अच्छा अवश्यमेव होना था।

कार्यक्रम सफलता का दूसरा पहलू था – उस योजना का क्रियान्वयन करने वाले आर्यजन। **इसमें पहले पैसा,** संसार में पैसा सब कुछ नहीं है, किन्तु बहुत कुछ है, इससे कोई मना नहीं कर सकता। योजना का आधार धन होता है। यदि धन की व्यवस्था प्रचुर मात्रा में नहीं होती तो कितनी भी सुन्दर योजना होती वह योजना, योजना ही रह जाती। परमात्मा की कृपा से महर्षि व वैदिक धर्म अनुयायी भामाशाह बनकर आगे आये और कार्यकर्त्ताओं को निश्चित कर दिया, इस महान कार्य की तैयारी के लिए।

इसमें सर्वप्रथम वर्तमान आर्य जगत के सर्वाधिक तन-मन-धन से सहयोगी आर्य समाज के भामाशाह कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी (एम. डी.एच.) कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार में भी बहुत बड़ा सहयोग रहा। महाशय जी का उत्साह व सहयोग कितना था वह उनकी इस भावना से आप जान सकते हैं-**''सम्मेलन में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की ऐसी आवभगत करना जैसे जंवाई राजा की होती है। खाने-पीने में बढ़िया भोजन और शुद्ध घी का उपयोग हो।''** इसके साथ ही इस श्रृंखला में आर्थिक बड़े सहयोगी की दृष्टि से सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी (जे.बी.एम.), श्री मुंजाल परिवार, श्री अशोक जी चौहान (एमिटी), श्री दीन दयाल जी गुप्ता (डॉलर), धर्मपाल आर्य। इसके अतिरिक्त प्रान्तीय सभाओं से उनमें सबसे बड़ा सहयोग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्राप्त हुआ। जिन महानुभावों ने सम्मेलन के पूर्व सहयोग नहीं दिया था, उन्होंने सम्मेलन स्थल पर आकर अपना आर्थिक सहयोग दिया, जिनकी संख्या हजारों में रही। इस यज्ञ में छोटी से छोटी राशि देने वाले भी बड़े उत्साह से राशि देकर अपने को भाग्यशाली मान रहे थे। इस प्रकार आर्थिक सहयोग देने हेतु पूरा आर्य जगत तैयार था।

इसी का दूसरा पहलू है – कार्यक्रम में उपस्थिति यह एक अद्भुत दृश्य था, जब हजारों-हजारों की संख्या में आर्यजन दिखाई पड़ते। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किसी नगर या ग्राम में कोई यात्रा-मेला लगा हुआ है, जिसमें बच्चे, जवान, बूढ़े सभी देखने के लिए आए हुए हैं।

यदि सारी व्यवस्थाएं ठीक हो जातीं, विद्वान वक्ता भी उपस्थित हो जाते किन्तु श्रोता के रूप में उपस्थिति कम होती तो? फिर तो इस कारण से सारा किया गया प्रयास व्यर्थ चला जाता। पूरे कार्यक्रम की सार्थकता, शोभा, बड़ी संख्या में उपस्थित श्रोताओं के कारण हुई।

कार्यक्रम की सफलता हेतु उपरोक्त तीनों कारण उपलब्ध थे, इसमें प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से हजारों कार्यकर्त्ताओं का अथक पुरुषार्थ, दानदाताओं, विद्वानों का सहयोग और परमपिता परमात्मा की अपार कृपा रही। इसलिए यह इतना भव्य व सफल हुआ।

इसी का तीसरा पहलू है कार्यकर्त्ताओं द्वारा इस योजना को सफल बनाने के लिए प्रयास। इस संबंध में मैं किसका नाम लूं किसका न लूं, यह एक बड़ी उलझन वाली स्थिति है। पूरे कार्यक्रम में जो कार्यकर्ताओं का मनोबल, उत्साह की पराकाष्ठा देखने में आई उसे जुनून शब्द से समझा जा सकता है। तात्पर्य यह कि मनुष्य की उसी स्थिति को जुनून कहा जाता है जिसमें वह कुछ पाने के लिए अथवा कुछ कर गुजरने के लिए अपनी पूरी शक्ति और सब कुछ दांव पर लगाकर भी उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है। वही जुनून अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिए जी जान से जुटे कार्यकर्त्ताओं में देखने को मिला। सक्रियता, उत्साह और लक्ष्य जब तीनों का मिश्रण हो जाए तो असफलता का कोई कारण ही नहीं बनता, जो आँखों ने देखा, कानों ने सुना उसकी कल्पना तो हमें पहले ही हो चुकी थी। गांव-गांव, शहर, प्रान्तीय सभाएं और भारत के बाहर कुछ देशों में जाकर प्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क करने का परिणाम इतनी विशाल जनसमूह की उपस्थिति हर एक स्थान पर हुई। निरन्तर कार्यकर्त्ताओं से और आर्यजनों से सम्पर्क बना रहा। बार-बार उन्हें आने के लिए आह्वान किया गया। इसके पश्चात् रातदिन कार्यकर्त्ता इसमें जुटे रहे, जैसे-जैसे समय आ रहा था वैसे-वैसे कार्यकर्ताओं की सक्रियता जिम्मेदारियां और मन में चिन्ता बढ़ती जा रही थी। चिन्ता इसलिए बढ़ रही थी कि जो अनुमान था उससे अधिक उपस्थिति का अनुमान हो गया था। यह भी हो गया था कि इतने सारे व्यक्तियों की व्यवस्था जो कठिन कार्य है वह कहीं बिगड़ न जाए किन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली और दिल्ली की सारी आर्य समाजें उनके सारे सदस्य विशेषकर आर्यवीर दल जो जगबीर सिंह और बृहस्पति जी आर्य के सानिध्य कार्य कर रहा था वह विशेष सहयोगी रहा। 60 बसें जो यात्रियों को लाने ले जाने का कार्य रात-दिन कर रही थीं उसमें आर्यवीर दल की बड़ी हिस्सेदारी रही। सभी कार्यकर्त्ताओं व दिल्ली वासियों ने अतिथि देव की परम्परा को निर्वाह करने में जुट गए और उसमें वे सफल हो गए, इतनी आत्मीयता इतना समर्पण परिवार की परिवार जिस कार्य को पूर्ण करने में लगे हों, वहां ऐसी भव्यता होना आश्चर्य वाली बात नहीं है। इस कार्यक्रम में देश के कोने-कोने से आर्यजन पहुंचे, कार्यकर्त्ता के रूप में भी उनका सहयोग प्राप्त होता रहा। भावनात्मक और आत्मिक संबंल भी उनसे मिलता रहा। जो इस कार्यक्रम का एक संबंल रहा।

चौथा बिन्दु था, कार्यक्रम को गरिमा प्रदान करने वाले कार्यक्रम और उनकी प्रस्तुति के लिए आमन्त्रित वक्तागण, विद्वान अतिथि एवं श्रोतागण।

इस कार्यक्रम में तीनों ही बातों का पूर्ण समावेश था। कार्यक्रम के जो सत्र थे प्रत्येक सत्र समाज, राष्ट्र, वैदिक धर्म कुरीतियों एवं पाखण्ड से संबंधित थे और प्रत्येक विषय पर जो वक्ता आमन्त्रित किए गए थे वे बहुत ही विद्वता पूर्ण सामयिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए उनके

– *जारी पृष्ठ 3 पर*

2024 में महर्षि दयानन्द जी के 200वें जयन्ती वर्ष के उपलक्ष में देशभर में होंगे विशाल आयोजन – राजनाथ सिंह, गृहमन्त्री

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का हर पल रहा उत्साह और उमंग से भरपूर – महाशय धर्मपाल, स्वागताध्यक्ष

आर्य समाज एक संस्था नहीं बल्कि देश का प्राण है – आचार्य देवव्रत, राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश

दुनिया में शांति हेतु हमें पुनः वेदों की ओर लौटना होगा – गंगा प्रसाद, राज्यपाल, सिक्किम

एक जातिविहीन समाज के निर्माण का श्रेय यदि किसी को जाता है तो आर्य समाज को जाता है – योगी आदित्यनाथ

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के बाद आजादी की लौ को यदि किसी ने जीवित रखा तो वह सिर्फ आर्य समाज था – मनोहर लाल खट्टर

अनिवार्य शिक्षा मन्त्र जो सरकार ने 2009 में दिया वह स्वामी दयानन्द ने 135 वर्ष पूर्व दिया था- डॉ. सत्यपाल सिंह

पृष्ठ 3 का शेष

उद्बोधन हुए। स्थापित भजनोपदेशकों की उपस्थिति की दृष्टि से भारत वर्ष के अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु उपस्थित रहे 3000 से अधिक आर्यजनों की 32 देशों से उपस्थिति रही। जिसमें पाकिस्तान, बंगला देश, दक्षिण अफ्रिका, मॉरिशस, सूरीनाम, हॉलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर, थाईलैण्ड, कैनेडा, फिजी, नेपाल, बर्मा, इंग्लैण्ड, कीनिया, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों से प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे। इतने प्रतिनिधियों का एक उद्देश्य के लिए उपस्थिति होना कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाने के लिए था।

संसार का उपकार करना है आर्यसमाज नियम और संगठन का उद्देश्य - स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती

आर्यसमाज का सम्पूर्ण संगठन राष्ट्र सेवा के लिए सदैव तत्पर रहा है और रहेगा - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

आगन्तुक महानुभाव - कार्यक्रम में पधारने वाले संन्यासी, विद्वान, भजनोपदेशक एवं सामाजिक व राजनैतिक दृष्टि से विशेष पहचान रखने वाले 500 से अधिक महानुभाव पधारे थे।

वक्ता के रूप में अनेक संन्यासीगण और विद्वानों को आमन्त्रित किया गया था। जिसमें स्वामी धर्मानन्दजी, स्वामी प्रणवानन्दजी, डॉ. स्वामी देवव्रतजी, स्वामी विवेकानन्दजी, स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, स्वामी व्रतानन्दजी, स्वामी सदानन्दजी, स्वामी गोविन्दागिरीजी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी शारदानन्दजी, स्वामी सुधानन्दजी, स्वामी चिदानन्दजी, स्वामी विदेह योगीजी, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, स्वामी धर्ममुनिजी, साध्वी उत्तामायति जी, साध्वी पुष्पाजी।

विद्वान - डॉ. सोमदेव शास्त्री, डा. वेदपालजी, डॉ. महेन्द्र अग्रवाल जी, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी, डॉ. प्रशस्क मित्र जी, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी, आचार्य वागीश जी (एटा), आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. महेश वेदालंकार, आचार्य अग्निव्रत जी, आचार्य सनत कुमार जी, डॉ. जयेन्द्र (नोएडा), डॉ. कर्णदेव जी, आचार्य पुनीत शास्त्री जी, डॉ. रामकृष्ण शास्त्री जी, डॉ. वीर पाल विद्यालंकार जी, डॉ. दुलाल शास्त्री जी, डॉ. सूर्या देवी जी, डॉ. नन्दिता जी, डॉ. अन्नपूर्णा जी, डॉ. प्रियंवदा वेद भारती जी, आचार्या गायत्री जी (नोएडा), डॉ. पवित्रा विद्यालंकार जी, डॉ. उमा आर्या जी।

भजनोपदेशक - योगेश दत्त जी, पं. सत्यपाल जी पथिक, नरेश दत्त जी, कुलदीप जी, अंजली जी, कुलदीप विद्यार्थी जी, श्री दिनेश पथिक, घनश्याम प्रेमी जी, जगत वर्मा जी, आचार्य अशोक जी, आचार्य मोहित शास्त्री जी, भानुप्रताप शास्त्री जी, केशवदेव शर्मा जी, कल्याण देव जी।

कार्यक्रम का प्रारंभ महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) एवं सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य के करकमलों से ओ३म् ध्वजारोहण कर किया गया। टाण्डा की कन्याओं ने ध्वज गीत गाया। तत्पश्चात् कार्यक्रम का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति माननीय राम नाथ जी कोविन्द के माध्यम से हुआ। अपने उद्बोधन में पूर्व परिचय में परिवार के सदस्यों का आर्य समाज से जुड़ने एवं स्वयं को कानपुर के आर्य विद्यालय से शिक्षा ग्रहण करना बताया।

वैदिक धर्म की ध्वजा को विश्व के कोने-कोने में फहराएंगे - धर्मपाल आर्य, संयोजक महासम्मेलन

इस अवसर पर हिमाचल के राज्यपाल माननीय आचार्य देवव्रतजी, सिक्किम के राज्यपाल माननीय गंगा प्रसाद जी, केन्द्रीय मन्त्री डॉ. हर्ष वर्धन जी, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, सांसद श्री स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी गोविन्द गिरी जी आदि की उपस्थिति रही। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ जी, हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री मनोहर लाल खट्टर, वित्तमन्त्री श्री कैप्टन अभिमन्यु, योग गुरु स्वामी रामदेव जी (पतंजलि), आचार्य बाल कृष्ण जी तथा समापन के अवसर पर भारत के गृहमंत्री राजनाथ सिंह जी, इसके अतिरिक्त विश्व हिन्दू परिषद, आर. एस. एस. तथा कांग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री रमाकान्त गोस्वामी, दिल्ली प्रदेश के उपमन्त्री श्री मनीष सिसोदिया आदि उपस्थित थे। सबने अपने उद्बोधन से उपस्थित आर्यजनों को लाभान्वित किया।

उपरोक्त कारणों से कार्य की गंभीरता का सृजन हुआ जिसमें सभी क्षेत्र के महानुभावों का पूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम स्थल इतना विशाल था कि जिसमें एक स्वस्थ आदमी को भी पूरी तरह देखने में परेशानी हो रही थी, थकान हो जाती थी, इसलिए वृद्धजनों के लिए या जो पैदल नहीं चल सकते थे, उनके लिए 10 ई-रिक्शा की नि:शुल्क भ्रमण व्यवस्था की गई थी, जिसमें हजारों व्यक्ति बैठकर वांछित स्थान पर आ-जा रहे थे। कार्यक्रम का पाण्डाल इतना भव्य और विशाल बना जो दिल्ली की राजधानी में संभवत: नगण्य से स्थानों पर ही देखा जा सकता है जिसमें बैठने की 12 से 15 हजार व्यक्तियों की क्षमता थी। उपस्थिति का पूर्व अनुमान होने के कारण मुख्य पाण्डाल के बाहर बड़े-बड़े स्क्रीन लगा रखे थे जिनमें हजारों व्यक्ति पाण्डाल के बाहर भी देखते पाए गए। पाण्डाल पूरी तरह भरा रहा। इसके अतिरिक्त 16 कक्ष अलग से थे जिनमें अलग-अलग विषयों पर विद्वान लोग गोष्ठियां कर रहे थे। बहुत ही विस्तृत अभूतपूर्व प्रदर्शनी जिसमें हजारों चित्र लगे थे, आकर्षण का मुख्य केन्द्र था।

दक्षिण अफ्रीका की मूल कन्याओं ने वेद मन्त्र पाठ, हवन व भजन तथा वहीं से पधारी साध्वी मैत्रयी द्वारा संन्यास लेना एक विशेष कार्य था। इस अवसर पर संन्यास व वानप्रस्थ दीक्षा ली गई।

आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन- महासम्मेलन में आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन पहली बार रखा गया जो एक नया प्रयोग था। श्री अर्जुनदेव चड्ढा जी राष्ट्रीय एवं श्री एस. पी. सिंह जी इस कार्यक्रम के दिल्ली संयोजक थे। आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन में युवाओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया व उनके माता-पिता अपने युवा होते बच्चों के विवाह के लिए एक दूसरे परिवारों के बीच बात-चीत करते देखे गये।

कार्यक्रम की विशेषता - यह थी कि परमात्मा की कृपा से हजारों की दैनिक उपस्थिति में किसी भी प्रकार की कोई दुर्घटना घटित नहीं हुई, कोई अव्यवस्था नहीं हुई और मौसम ने अपना पूर्ण साथ दिया।

स्वामी दयानंद सरस्वती के विचार ही भारत को विश्व गुरु बना सकते हैं - नितिन गडकरी

प्रत्येक ने यही कहा कि 2012 से भी अच्छी सर्वसुविधा युक्त यह कार्यक्रम रहा।

साहित्य - के लगभग 200 स्टॉल लगे थे जितना साहित्य व अन्य सामग्री इस अवसर पर वितरित हुई, उतनी कहीं कभी नहीं हुई, यह अपने आप में एक विशेषता रही।

कार्यक्रम स्थल अभूतपूर्व था - वैसे तो पूरा कार्यक्रम स्थल ही अपने आपमें सुसज्जित, सुन्दर, अकल्पनीय, साजसज्जा को देखते हुए मन्त्रमुग्ध कर देने वाला था। मुख्य द्वार इतना विशाल और आकर्षक था जिसे रास्ते से गुजरने वाला हर कोई देखने के लिए रुक कर देखता। इसके अतिरिक्त कुछ और विशेष कार्यक्रमों की सूची भी है जो पहली बार हुए। दिल्ली के अन्तर्गत स्थित विद्यालय के बच्चों की ओर से बहुत ही सैद्धांतिक तथा आर्य समाज के इतिहास पर अन्धविश्वास निवारण के लिए लघु नाटिकाएं प्रस्तुत की गईं जिसे सभी ने सराहा।

आर्यसमाज ने सर्वप्रथम उठाया देश में शिक्षा क्षेत्र में मजबूत कदम - जगदीश मुखी, राज्यपाल असम

मुख्य पाण्डाल के अतिरिक्त अलग-अलग छोटे-छोटे 17 पाण्डाल लगे थे, जिनमें निरन्तर गोष्ठियां चल रही थीं, जिनमें प्रश्न-उत्तर, शंका समाधान, प्रदर्शनी, यज्ञ, विज्ञान आदि पर विद्वान प्रवचन कर रहे थे।

लेजर शो - महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की प्रमुख घटनाओं पर लेजर शो का प्रसारण अद्भुत था, जिसे पहली बार देखा गया। स्थान-स्थान पर महर्षि के चित्र व सन्देश, वेद वाक्य आदि लगाए गए थे।

वर्ल्ड रेकार्ड बना - विशाल स्थल पर 10,000 यज्ञिकों द्वारा एक साथ यज्ञ करने का पहला अवसर था। विहंगम दृश्य आत्मविभोर कर रहा था। संसार में यह पहला अवसर था जब इतनी बड़ी संख्या में इसे सम्पन्न करवाया गया। इसे गोल्ड वर्ल्ड ने विश्व रेकार्ड में दर्ज किया गया।

गुरुकुल-गौशाला-निरन्तर यज्ञ - गुरुकुल व्यवस्था किस प्रकार होती है, किस प्रकार वहां की वेशभूषा दिनचर्या होती है, रहने की प्राचीन समय से क्या व्यवस्था, किस प्रकार आचार्य शिक्षा प्रदान करते थे, गौशाला किस प्रकार होती है आदि बातों को एक छोटे रूप में निर्मित कर निवास, प्रवचन, यज्ञ आदि बताया जा रहा था, जहां बड़ी संख्या में निरन्तर उपस्थिति बनी रही।

मुख्य यज्ञशाला - एक बहुत विशाल स्थल में बनी थी जिसकी भव्यता अपने आप में सबको आकर्षित कर रही थी। यज्ञ में ब्रह्मा के रूप में देश के ख्यातिमान विद्वान विदूषी अलग-अलग समय में यज्ञ वेदी को सुशोभित करते रहे। सस्वर मन्त्रपाठ शिवगंज, चोटीपुरा, देहरादून, वाराणसी, हाथरस आदि गुरुकुल की कन्याओं द्वारा किया गया।

छोटी यज्ञशाला - इसके अतिरिक्त पास में ही एक छोटी यज्ञशाला निर्मित की गई थी जिसमें निरन्तर यज्ञ चल रहा था। एक समय में 8 सदस्य बैठकर यज्ञ कर सकते थे। यह व्यवस्था दिल्ली की आर्य समाजों के पुरोहितगणों द्वारा संचालित थी। इसमें भी दिनभर यज्ञ के लिए यजमान उपलब्ध रहे।

भोजन व्यवस्था - इतनी बड़ी कि 30 से 40 हजार भोजन करने वालों की उपस्थिति में किसी को भोजन हेतु इन्तजार न करना पड़े, लम्बी पंक्ति में खड़ा न होना पड़े, खाद्य पदार्थों की कमी न रहे, एक साथ कई प्रकार के व्यंजन उपलब्ध हों, यह सुनने में अविश्वसनीय लग रहा हो, किन्तु यह हुआ है। प्रत्येक आगन्तुक के लिए यह एक अचम्भा था। इस हेतु विशाल भोजनशाला, भोजन करने हेतु विशाल परिसर और निरन्तर चल रही व्यवस्था जिसमें सैकड़ों स्वयं सेवक व आर्यजन सहयोग कर रहे थे, उनके प्रयास से यह संभव हो सका। हर कोई भोजन में बने पदार्थों की पृथक-पृथक वैरायटी और स्वादिष्ट होने की प्रशंसा कर रहा था।

- जारी पृष्ठ 6 पर

आर्यसमाज के वरिष्ठ आर्य परिवारों - महाशय धर्मपाल जी एवं समस्त एम.डी.एच. परिवार, माता सन्तोष मुंजाल जी एवं समस्त मुंजाल परिवार, डॉ. अशोक कुमार चौहान जी एवं समस्त एमिटी परिवार तथा श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी एवं समस्त जे.बी.एम. परिवार का विशेष आशीर्वाद सम्मेलन के प्रत्येक कार्य में निरन्तर बना रहा।

स्वामी दयानंद सरस्वती सामाजिक और आध्यात्मिक

योग के बड़े-बड़े आयोजन देखे, किन्तु यज्ञ के इतिहास में इ

सार्वदेशिक एवं दिल्ली सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित अन

सुधार के निर्भीक योद्धा थे - श्री राम नाथ कोविन्द

(भारत के माननीय राष्ट्रपति)

तना बड़ा आयोजन पहली बार देखा - योगगुरु स्वामी रामदेव

र्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में लाखों की संख्या में उमड़ा जन सैलाब

पृष्ठ 3 से आगे

इसके अतिरिक्त - खाने-पीने व भोजन बाजार से 30 प्रतिशत कम मूल्य पर दुकानदारों द्वारा व्यवस्था की गई, जहां शुद्ध सात्विक भोजन व खाद्य पदार्थ उपलब्ध थे। कुछ दुकानों पर तरह-तरह की मिठाई, नमकीन, चाट और भोजन उपलब्ध था। इसका उपयोग भी खूब हुआ।

सन्देश - आर्य समाज के विद्वान, सन्त, संन्यासी या पदाधिकारी तो आर्य समाज की बात महर्षि दयानन्द की प्रशंसा करते ही हैं, करेंगे ही। इसका प्रभाव भी होता ही है किन्तु आपकी बात जब ऐसा कोई व्यक्ति जो प्रत्यक्ष रूप से आर्य समाज का कोई पदाधिकारी या सदस्य नहीं है, समाज में एक महत्त्वपूर्ण पद पर है यदि वह आपकी बात कहता है तो सारा संसार उसे अधिक महत्त्व देता है, उससे प्रभावित होता है।

कार्यक्रम का लाईव प्रसार आस्था टी.वी. चैनल पर हो रहा था, यू ट्यूब, फेसबुक आदि पर कार्यक्रम प्रसारित हो रहा था, जिसे कार्यक्रम स्थल के अतिरिक्त करोड़ों व्यक्ति अनेकों देशों में देख रहे थे। वक्ताओं द्वारा वैदिक धर्म की विशेषता, आर्य समाज का योगदान और आवश्यकता पर विचार प्रकट हो रहे थे। ऐसे प्रेरणास्पद वैदिक धर्म व आर्य समाज से संबंधित विचार भारत के माननीय राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द जी के द्वारा हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी, सिक्किम के राज्यपाल माननीय श्री गंगा प्रसाद जी द्वारा, आसाम के राज्यपाल माननीय श्री जगदीश मुखी जी, इसके अतिरिक्त केन्द्रीय मन्त्री डॉ. हर्षवर्धन जी, केन्द्रीय मन्त्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी, केन्द्रीय परिवहन मन्त्री श्री गडकरी जी, हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री मनोहर खट्टर एवं, यू. पी. के मुख्यमन्त्री योगी आदित्य नाथ जी, दिल्ली प्रदेश के उपमन्त्री श्री मनीष सिसोदिया तथा भारत के गृहमन्त्री श्री राज नाथ सिंह जी, स्वामी गोविन्द गिरी जी (भारत माता मन्दिर हरिद्वार)। सभी माननीय वक्ताओं, आर्य समाज की श्रेष्ठता और आवश्यकता पर बड़ी मजबूती से व्याख्यान दिए। इससे पूरे मानव समाज पर आर्य समाज का एक अच्छा परिचय उसके कार्यो एवं महत्त्व को प्रोत्साहन मिला।

समलैंगिकता एवं यौन संबंधों की स्वतन्त्रता जैसे विषय पर चर्चा कर उससे समाज को बचाने के लिए भारत सरकार को ज्ञापन दिया।

जातिवाद, आरक्षण, नशामुक्ति जैसे विषयों पर गंभीर चर्चा कर इन बुराईयों से समाज को दूर करने पर चर्चा हुई।

वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्य परिवार सम्मेलन, अन्धविश्वास निवारण सम्मेलन, आर्य वीर सम्मेलन, संस्कृति एवं सामाजिक चेतना सम्मेलन, कवि सम्मेलन व अनेक विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया गया।

आर्य समाज के पूर्व में भी बड़े-बड़े भव्य आयोजन होते आये हैं, उनसे तुलना करना अज्ञानता है वे जिस परिस्थिति में हुए उसके अनुसार उनका महत्त्व था। आज परिस्थितियां, साधन, तकनीकी व्यवस्था सब बदले हुए हैं। इसलिए कार्यक्रम का स्वरूप, व्यवस्था और विशाल भव्यता अभूतपूर्व थी।

प्रत्येक कार्यक्रम व्यवस्थित हो, सार्थक हो इसका पूर्ण प्रयास किया गया। कार्यक्रमों को ठीक से संचालित करना एक महत्तव्पूर्ण कड़ी होती है, इसलिए कार्यक्रम के व्यवस्थित संचालन हेतु कुशल व श्रेष्ठ अनुभवी वक्ताओं को सौंपी थी, जिसमें श्री विनय आर्य, डॉ. विनय वेदालंकार, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, श्री अशोक जी आर्य (उदयपुर), श्री वाचोनिधि आर्य, श्रीमती मृदुला चौहान, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी (गुड़गांव), श्रीमती सुदेश आर्या जी, श्री सूर्य प्रसाद कीरे (हालैण्ड), श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी, श्री धर्मपाल आर्य, स्मारिका संयोजक श्री अजय सहगल, श्री सत्यवीर जी शास्त्री (अमरावती), श्री व्यासनन्दन जी शास्त्री (बिहार), श्री सतीश चड्ढा जी, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (दिल्ली), डॉ. दक्षदेव जी (इन्दौर) आदि थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य की सूझबूझ व कार्यक्रम को बड़ा सहयोग मिला। बीच में कुछ समय अस्वस्थ हो गए किन्तु उस स्थिति में भी दिल्ली रहकर रातदिन कार्य में जुटे रहे। वही स्थिति श्री विनय आर्य व कुछ और कार्यकर्त्ताओं की भी हो गई थी। किन्तु उस ओर ध्यान न देकर एक ही धुन थी सम्मेलन-सम्मेलन। ऐसी लगन आर्यों में जागृत हो तो समाज का पूरा चित्र ही बदल सकते हैं।

विशेष - ये पंक्तियां सम्मेलन के लिए जवाबदार सदस्यों, पदाधिकारियों की ओर से मैं निवेदन कर रहा हूं।

सम्मेलन का उद्देश्य आर्यों की बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित कर वाहवाही लूटना कदापि नहीं था। उद्देश्य था निराशाभाव से घिरे कुछ आर्यजनों को संगठन शक्ति का परिचय देना और सम्मेलन में आकर यहां से एक संकल्प लेकर नव जागरण करना था। इस सम्मेलन में ऐसा बहुत कुछ हुआ। सम्मेलन में आने वालों को अपनी विशाल शक्ति देख उत्साह भी हुआ और प्रेरणा भी।

अच्छी से अच्छी व्यवस्था हो सके, अच्छे वक्ताओं से प्रेरणास्पद चर्चा के द्वारा एक सन्देश आर्यजनों तक पहुंचे। भोजन, निवास, आतिथ्य, अन्य आवश्यक आवश्यकताएं उत्तम हो, इसका पूरा-पूरा ध्यान दिया गया। 2006 व 2012 में रही कुछ कमियों को ध्यान में रखते, उनकी पुनरावृत्ति न हो प्रयास रहा जिसमें पहले की अपेक्षा अधिक सफलता मिली किन्तु पूर्ण सफलता मिली यह नहीं कहा जा सकता।

पूर्णता तो परमेश्वर के ही कार्यों में है, हम सब कार्यकर्त्ता मानव हैं, इसलिए कुछ त्रुटियां, व्यवस्था, व्यवहार या कार्यक्रम की उपयोगिता की दृष्टि से होना स्वाभाविक है। इसके लिए हम सबको किसी आगन्तुक अतिथि, विद्वान या कार्यकर्त्ता को हुए शारीरिक और आत्मिक क्लेश, कष्ट के लिए हमें खेद है। ये त्रुटियाँ यदि रही भी तो किसी आलस्य, प्रमाद दुर्भावना के कारण नहीं, तात्कालीन परिस्थितियों के कारण, विशाल कार्यक्रम की व्यवस्था के कारण या मानवीय भूल के कारण रही होंगी। कृपया इसे अन्यथा न लेवें। किन्तु इनसे हमें अवगत अवश्य करावें ताकि भविष्य में ये पुनः न हो सकें।

कार्यक्रम का 28 अक्टूबर को समापन आपकी, हमारी यात्रा का यहां समापन नहीं विराम हुआ है। अब 2024 महर्षि के 200 वें जन्म दिवस की तैयारी में लगना है। आगामी कार्यक्रम इससे कई गुना बड़ा होगा, सारा विश्व स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व को जान जावेगा, उसकी तैयारी में हम सबको लगना है।

इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय कर्मठ, समर्पित कार्यकर्ताओं, अधिकारियों, विद्वानों को तो है ही किन्तु प्रत्येक आर्य का भी है, जो दूर-दूर से चलकर कष्ट उठाकर यहां पहुंचे, अपनी उपस्थिति से इसकी गरिमा बढ़ाई। सभा की ओर से उन सबका आभार व्यक्त करता हूं।

- प्रकाश आर्य
सभा मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का

त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन एवं निर्वाचन

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक 7 अक्तूबर, 2018 के निर्णयानुसार सभा का त्रैवार्षिक साधारण सभा अधिवेशन एवं निर्वाचन रविवार 25 नवम्बर, 2018 को प्रातः 10:30 बजे आर्यसमाज 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में आयोजित किया जाएगा। सभी प्रतिनिधियों को ऐजेण्डा पत्रक स्पीड पोस्ट द्वारा भेज दिया गया है।

आर्यसमाजों से निवेदन है कि यदि आपकी आर्यसमाज की ओर से सभा की देय दशांश एवं वेद प्रचार की राशियां, सदस्यों की सूची, प्रतिनिधियों के नाम एवं वार्षिक कार्य विवरण अभी तक न भेजा गया हो तो कृपया यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें, जिससे आपकी आर्यसमाज के मनोनीत/ निर्वाचित प्रतिनिधियों को ऐजेण्डा प्रपत्र जारी किया जा सके। यदि आपकी आर्यसमाज की ओर से प्रतिनिधियों के नाम और सदस्यों की सूची नहीं भेजी जाती है और दशांश-वेदप्रचार का रिकार्ड पूर्ण है तो ऐसी स्थिति में आपकी आर्यसमाज द्वारा पूर्व में भेजे गए प्रतिनिधियों को ही इस अधिवेशन के लिए स्वीकृत कर लिया जाएगा।

अतः सभी आर्यसमाजों से निवेदन है कि आर्यसमाज की ओर सभा की देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियां, अधिवेशन में भाग लेने के लिए निर्वाचित/मनोनीत प्रतिनिधियों के नाम, वार्षिक कार्य विवरण एवं समस्त सदस्यों की सूची-नाम, पते, दूरभाष एवं चन्दे के विवरण के साथ, सूचना प्रकाशन के 3 दिनों के अन्दर सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 के पते पर भिजवाने अथवा स्वयं पहुंचकर जमा कराने की कृपा करें। दशांश-वेद प्रचार राशियों के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कार्यालयाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जी (9540040322) से सम्पर्क करें।- ***विनय आर्य, महामन्त्री***

आओ ! संस्कृत सीखें — **संस्कृत वाक्य अभ्यासः** (70)

गतांक से आगे.... — **''चाहिए'' अर्थबोधक तव्यत् व अनीयर् प्रत्यय**

''चाहिए'' अर्थ को कहने में धातु से तव्यत् व अनीयर् प्रत्यय होते हैं। इनके क्रमशः तव्य व अनीय शेष रहते हैं। ये प्रत्यय कर्मवाच्य व भाववाच्य में होते हैं।

उदाहरण- तेन कार्यं कर्तव्यम् । यहां क्रिया अर्थात् धातु में तव्यत् प्रत्यय हुआ है अतः वाक्य का अर्थ हुआ ''उसके द्वारा कार्य किया जाना चाहिए''। इस प्रकार अनीयर् प्रत्ययान्त शब्दों के प्रयोग होंगे।

2) मया लेखः लेखितव्यः।	मेरे द्वारा लेख लिखा जाना चाहिए।
3) लतया अत्र स्थातव्यम्।	लता के द्वारा यहां ठहरा जाना चाहिए।
4) देव्या गानं गातव्यम्।	देवी के द्वारा गान गाया जाना चाहिए।
5) पित्रा तत्र स्नातव्यम् ।	पिता के द्वारा वहां स्नान किया जाना चाहिए।
6) युष्माभिः पाठः पठनीयः।	तुम सबके द्वारा पाठ पढ़ा जाना चाहिए।
7) भगिन्या हसनीयम्।	बहन के द्वारा हंसा जाना चाहिए।
8) राज्ञा राज्यं पालनीयम् ।	राजा के द्वारा राज्य का पालन किया जाना चाहिए।
9) शिष्येण गुरुः सेवनीयः ।	शिष्य के द्वारा गुरु की सेवा की जानी चाहिए।
10) साधुना इत्थम् आचरणीयम् ।	साधु के द्वारा इस प्रकार आचरण किया जाना चाहिए।

- *क्रमशः*

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय, मो. 9899875130

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सम्पादकीय

केदारनाथ : फिल्म का विरोध जायज

केदारनाथ में तबाही के बाद चारों ओर एक बेहद डरावना नजारा था। हर तरफ लोग चीख-चिल्ला रहे थे और अपनों को ढूंढ रहे थे। पहाड़ों की मनोरम गोद अचानक जी का जंजाल बन गई थी। भूखे प्यासे लोग खुद को बचा रहे थे। निकलने के करीब सारे रास्ते बंद थे। देश में मातम का माहौल था क्योंकि त्रासदी इतनी बड़ी थी कि जिसका अनुमान सैकड़ों के बजाय हजारों लाखों में था। देश की तीनों सेनाएं कंधे से कंधा मिलाकर जो कुछ बचा था उसे सुरक्षित बाहर निकालने का कार्य कर रही थीं। परिवारों के परिवार इस जलप्रलय में जिंदा दफन हो गए, जो बचे थे वह अपनों को तलाश रहे थे, जिंदा न सही लोग अपनों की लाशों को पाकर भी ईश्वर का उपकार समझ रहे थे।

इस जयप्रलय में कितनी माताओं की गोद सुनी हुई, न जाने कितनी पत्नियों के सुहाग उजड़ गए, कितने लोगों ने अपने परिवार खोए और कितने परिवार आज भी अपने लोगों के लौट आने का रास्ता निहार रहे हैं। जहां इस त्रासदी में विनाश के कारण खोजने थे, वहां फिल्म निर्माता निर्देशक अभिषेक कपूर प्रेम, नग्नता धर्म और मजहब खोज बैठे।

असल में पांच साल पहले केदारनाथ में आई भीषण बाढ़ की घटना की पृष्ठभूमि पर बनी फिल्म केदारनाथ विवादों में घिर गई है। फिल्म अगले महीने रिलीज होने वाली है। बताया जा रहा है फिल्म की कहानी केदारनाथ की यात्रा पर गए एक परिवार की है। यहां एक पिट्ठूहै। जो अपने कंधे पर भारी चीजें या बुजुर्ग-थके लोगों को लादकर ऊंचाई पर चढ़ाता है। यह पिट्ठू एक मुस्लिम लड़का है। उसे अपने परिवार के साथ केदारनाथ यात्रा पर आई एक हिंदू लड़की से प्यार हो जाता है।

इस कारण इस फिल्म का केदारनाथ के पुजारियों से लेकर राजनीतिक दलों ने विरोध शुरू कर दिया है। फिल्म के विरोध में उतरे लोग फिल्म के नायक और नायिका के बीच दर्शाए गए अंतरंग दृश्यों को धार्मिक आस्था से छेड़छाड़ बता रहे है।

इस फिल्म की कहानी कनिका ढिल्लो ने लिखी है। जरूर इस कहानी को लिखने से पहले बैठ कर बात हुई कि इस त्रासदी से व्यापार कैसे निकाला जा सकता है! सोचा होगा एक हिंदू लड़का और एक लड़की को लेकर फिल्म बनाएंगे, फिर सोचा होगा, नहीं यार ऐसे नहीं! ऐसा करो कि लड़का मुस्लिम लो और लड़की हिंदू इससे फिल्म का प्रमोशन भी हो जाएगा और एजेंडा भी। कोई विरोध करे तो उसे हिन्दू कट्टरपंथी कहकर किनारे किया जा सकता है।

बात यहीं खत्म नहीं होती बल्कि आशुतोष ने फिल्म में प्रेमी युगल को बाढ़ के उस बैकग्राउंड में बोल्ड सीन करते दिखाया गया है, जिसमें हजारों लोग मारे गए थे। यानी संवेदना का यहां कोई काम नहीं था। सिर्फ सेक्स और वासना ही बची थी।

मैं यह नहीं कहता कि इस विषय पर फिल्म नहीं बननी चाहिए थी बिल्कुल बनाइए पर उसमें वह कारण स्पष्ट कीजिए जिसके कारण इतनी बड़ी त्रासदी हुई थी। फिल्म में दिखाया गया है कि जब हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ करते हैं तो कैसे वह अपना रौद्ररूप दिखाती है। बताया जाता है जलप्रलय के बाद सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर तत्कालीन सरकार ने रवि चोपड़ा कमेटी बनाई थी। फिल्म में इस कमेटी की रिपोर्ट को आधार बनाया जा सकता था कि आपदा का कारण चोरबरी ग्लेशियर का फटना था लेकिन नीचे मंदाकिनी नदी के किनारे हुए तबाही का कारण जल विद्युत् परियोजनाएं थीं। विनाश केवल चोरबारी झील के फटने की वजह से नहीं हुआ था। विनाश जल विद्युत परियोजनाओं द्वारा गंगा के प्रवाह को अवरोध करने के कारण हुआ था।

फिल्म में दिखाया जा सकता था कि आपदा के वक्त केदारनाथ में मौजूद रहे चश्मदीदों ने किस तरह घटना को महसूस किया देश के इतिहासकार, वैज्ञानिक, भूगर्भशास्त्री और आपदा विशेषज्ञों की टीम को तबाही से पहले आगाह करते दिखा सकते थे आपदा के बाद ये दिखाया जा सकता था कि प्रकृति से अत्यधिक छेड़छाड़ के क्या नतीजे हो सकते हैं।

.....कमाल की कल्पना कि आशुतोष साहब ने जो यह प्यार दिखाया। यदि प्यार दिखाने का इतना शोक है तो दिखाइए! इलाहबाद में हिना तलरेजा और अदनान का प्यार कैसे अदनान ने अपनी आंखों के सामने अपने दोस्तों से हिना का गैंगरेप करवाया। उसके बाद गोली मारकर उसकी हत्या कर दी थी। दिखाइए! दिल्ली के मानसरोवर गार्डन में आदिल ने अपनी कथित प्रेमिका को सरेबाजार चाकुओं से गोद डाला था।.....

चलो यह महंगा सौदा हो सकता था तो फिल्म में यह तो दिखाया जा सकता था कि आखिर किस देश की सेनाओं के जवानों ने अपने प्राणों की प्रवाह न करते हुए पग-पग पर मौत का सामना करते हुए कितने लोगों की जान बचाई, किस तरह सेना के जवान रस्सियों के सहारे फंसे लोगों को अपनी पीठ पर लादकर निकाल रहे थे। यह भी दिखा सकते थे कि किस तरह त्रासदी के बाद भूख और विषम परिस्थितयों से लोगों को जूझना पड़ा।

लेकिन कमाल की कल्पना कि आशुतोष साहब ने जो यह प्यार दिखाया। यदि प्यार दिखाने का इतना शोक है तो दिखाइए! इलाहबाद में हिना तलरेजा और अदनान का प्यार कैसे अदनान ने अपनी आंखों के सामने अपने दोस्तों से हिना का गैंगरेप करवाया। उसके बाद गोली मारकर उसकी हत्या कर दी थी। दिखाइए! दिल्ली के मानसरोवर गार्डन में आदिल ने अपनी कथित प्रेमिका को सरेबाजार चाकुओं से गोद डाला था। उस पर फिल्म बनाइए कैसे रकीबुल हसन, जिसने राष्ट्रीय स्तर की शूटर तारा सहदेव को धोखे से फंसाया और धर्मपरिवर्तन के लिए यातना दी।

लेकिन फिल्म बनाने वालों को पता है कि फिल्म के बहाने कैसे प्रसिद्धि और पैसा कमाया जाता है, कैसे धार्मिक रंग देकर फिल्मांकन के मामले में फिल्मी मसालों को बेचा जाता है। कैसे विवाद पैदा किया जाता है सनसनी, शोर, विरोध के बीच जब तक सिनेमाघरों के बाहर पुलिस तैनात न हो तब तक भला फिल्म रिलीज करने का क्या फायदा। तो इस कारण मैं दावे से कह सकता हूं कि फिल्म का विरोध जायज है।

– *सम्पादक*

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 12 नवम्बर, 2018 से रविवार 18 नवम्बर, 2018
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 15/16 नवम्बर, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 नवम्बर, 2018

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018

25-26-27-28 अक्टूबर 2018

भव्यता, विशालता और विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय

- अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का विश्व स्तर पर किया गया था– टी. वी. विज्ञापन और सोशल मीडिया से प्रचार–प्रसार
- दिल्ली के रामलीला मैदान के क्षेत्रफल 5.25 लाख स्क्वेयर फीट से लगभग सात गुना बड़ा 33 लाख स्क्वेयर फीट था सम्मेलन स्थल का विशाल आकार
- 10 लाख स्क्वेयर फीट एरिये पर बने थे–वाटर प्रूफ पांडाल
- धूल मिट्टी से बचाव के लिए 5 लाख स्क्वेयर फीट भूमि पर बिछा था–कारपेट
- मैदान को समतल करने के लिए 4 जे.सी.बी और 2 रोड रोलर तीस दिन तक लगातार कार्य में लगे रहे
- 20 हजार रनिंग फीट टीन बाउंड्री वाल से की थी सुरक्षा व्यवस्था
- सम्मेलन स्थल पर कराए गए 22 पानी के ट्यूबवैल बौरिंग
- 3 किलोमीटर लंबी बिछवाई थी पीने के पानी की पाईप लाईन –24 स्थानों पर बने थे पानी पीने के प्लेटफार्म
- स्वच्छता में चार दिनों तक लगातार 150 सफाई कर्मचारियों ने की कड़ी मेहनत
- 127 समितियों के 2500 कार्यकर्त्ता दिन–रात लगे रहे व्यवस्थाओं में
- अभूतपूर्व सौंदर्य एवं भव्य शोभा से युक्त था–सम्मेलन का मुख्य प्रवेशद्वार
- सम्मेलन स्थल की दिव्य साज–सज्जा से खिल उठे आर्यजनों के तन–मन
- भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी ने अपने करकमलों से किया सम्मेलन का उद्घाटन
- भारत के प्रधानमंत्री जी ने भेजा शुभकामना संदेश
- हरियाणा और उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री भी पधारे सम्मेलन में
- स्वामी रामदेव जी ने दिया नव जागृति का ओजस्वी उद्बोधन
- भारत के गृहमंत्री की उपस्थिति में हुआ भव्य समापन समारोह
- चार केंद्रीय मंत्री, तीन राज्यपाल, पांच सांसदों सहित सैकड़ों गणमान्य महानुभावों की रही उपस्थिति
- 10000 हवन कुण्डों पर दस हजार याज्ञिकों ने एक साथ यज्ञ करके बनाया विश्व रिकार्ड
- मुख्य पांडाल सहित 17 स्थानों पर एक साथ चलें कार्यक्रमों के भव्य आयोजन
- सम्मेलन स्थल इतना विशाल था कि पूरा सम्मेलन शायद ही कोई देख पाया हो
- आर्य वीर एवं वीरागनांओं के व्यायाम प्रदर्शन से अभिभूत हुए आर्यजन
- 60 स्थानों पर आगुन्तकों के रहने की थी उत्तम व्यवस्था
- 70 बसों द्वारा की गई थी अर्याजनों को लाने ले जाने की कुशल व्यवस्था
- 32 देशों के 3000 प्रतिनिधियों ने की सम्मेलन में भागीदारी
- 150 स्कूल एवं गुरुकुलों के बच्चों ने लिया भाग
- लगभग 200000 से अधिक आर्यजनों ने लिया सम्मेलन में भाग
- 40 प्रतिशत से अधिक संख्या 30 वर्ष से कम उम्र के लोगों की थी
- सभी आगुन्तकों के लिए भोजन की थी सुंदर व्यवस्था
- प्रांतीय रूचि के अनुसार भी बनाए गए थे स्वादिष्ट सुपाच्य व्यंजन
- सम्मेलन स्थल पर निशुल्क दूध, दही, छाछ का लोगों ने लिया खूब आंनद

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सहव्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह